विचार बिन्दु

अभिलाषा ही घोड़ा बन सकती तो प्रत्येक मनुष्य घुड़सवार हो जाता। –शेक्सपीयर

आज़ादी का दिन जश्न मनाने के साथ अपने को टटोलने का भी हो

दो दिन बाद देश अपनी आजादी पाने के दिन का जब सालाना जश्न मना रहा होगा तब यह सवाल भी सामने होगा कि आज़ादी के अमृतकाल के बाद भी क्या हम भारत के लोगों का औपनिवेशिक और सामंती दौर से निकल कर समानता वाला निश्छल समाज और राज्य व्यवस्था बनाने का सपना पूरा हो सका है? यह भी सवाल होगा कि इस सपने को पूरा करने की व्यवस्था करने वाला दुनिया के किसी भी देश से बड़ा लिखित संविधान होने के उपरांत भी क्या हम उस सपने को हकीकत में तब्दील कर पा रहे हैं? हम भारत के लोग अब खुद अपने नियंता हैं लेकिन आज़ादी के 79वें साल में प्रवेश करते समय हम क्यों अपने आप को असहाय महसूस कर रहे हैं? इन सवालों के बहुत से अकादमिक जवाब हो सकते हैं। मगर हकीकत को कैसे नज़रअन्दाज़ किया जाए।

देश में जब अधिक गरीबी थी तब उतनी ही अधिक ईमानदारी भी थी। देश की आज़ादी के बाद अभाव की अर्थव्यवस्था थी, मगर लोगों में साझा था। अपने नये संविधान से मिले सबकी समानता के मूल्य को व्यवहार में लाने का सपना था। सबके स्कूलएक थे; अस्पताल एक थे। शिक्षा और स्वास्थ्य मे निजी मुनाफे का महाजनी खेल नहीं था। गरीबी में भी जीवन आसान था। औपनिवेशिक लूट के बाद विकास के डग भरते इस देश की सामाजिक और आर्थिक यात्रा अत्यंत ही जटिल रही है। एक समय था जब देश निर्धनता, संसाधनों की कमी, और अल्पविकसित अर्थव्यवस्था से जूझ रहा था, परंतु उस दौर में समाज के भीतर एक मूल्यबोध, एक नैतिक अनुशासन और ईमानदारी की सजीव भावना देखने को मिलती थी। वही देश आज आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर है – वैश्विक स्तर पर अपनी आर्थिक ताकत को सिद्ध कर रहा है, उपभोक्तावाद और तकनीकी प्रगति के युग में प्रवेश कर चुका है – लेकिन यहां नैतिकता और ईमानदारी जैसे मानवीय मूल्यों का ह्रास चिंताजनक रूप से बढ़ गया है। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जहां पहले संसाधनों की कमी थी, वहां ईमानदारी की बहुतायत थी और आज जब समृद्धि और साधनों का ज्वार उमड़ रहा है, तो वहां नैतिक मूल्यों का अकाल दिखाई दे रहा है। सरकारी और पुलिस कर्मियों व अधिकारियों तथा निर्वाचित जन–प्रतिनिधियों के कदाचार पकड़े जाने की रोजाना आ रही खबरें अब इतनी आम हो चली हैं कि वे किसी को असहज नहीं करती। पहले भ्रष्टाचार में पकड़े जाने वाले की निगाहें नीची होती थी और रिश्वत का लेन–देन टेबल के नीचे होता था। अब वह खुल्लम–खुल्ला होता है। कदाचार करने वाले अब समाज की नज़रों से नहीं गिरते।

आज़ादी के बाद के तीन दशक पूरे होने तक भारत आर्थिक रूप से एक विकासशील और संघर्षशील देश था। साधनों की अत्यधिक कमी थी, भीषण बेरोजगारी थी, भुखमरी जैसी अत्यंत गरीबी थी, और सीमित आय की स्थिति थी। कृषि प्रधान देश होने पर भी सूखेकाल में खाद्यान्न की पूर्ति के लिए विदेशी मददपर निर्भरता रहती थी। फिर भी सामान्य नागरिकों में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना देखने को मिलती थी। अपवादों को छोड़ कर रेल टिकट के कंडक्टर से लेकर पोस्ट ऑफिस के क्लर्क तक, अध्यापक से लेकर दुकानदार तक – अपने सीमित संसाधनों में भी कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता से काम करते थे। इसका एक कारण यह था कि समाज में 'ईमानदार होना' गर्व का विषय था। परिवारों में बच्चों को 'सच बोलने', 'अपना काम ईमानदारी से करने' और एक दूसरे की मदद करने की सीख दी जाती थी। नैतिक शिक्षा स्कूलों में सिर्फ पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा हुआ करती थी। पीछे मुड कर हम यह भी देख सकते हैं कि ईमानदारी समाज में 'सामूहिक चरित्र' के रूप में स्थापित थी। लोग अपने कर्तव्यों को केवल नौकरी के रूप में नहीं, बल्कि सेवा के रूप में निभाते थे। यह विचारधारा गहरे सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों से जुड़ी हुई थी जहां 'धर्म' का अर्थ केवल पूजा–पाठ नहीं, बल्कि 'कर्तव्य पालन' था।

फिर आया समृद्धि का युग जिसमें सुविधाओं का तो विकास और विस्तार होता गया लेकिन नैतिकता का पतन भी होता गया। हालांकि दार्शनशास्त्री कहते हैं कि कोई नैतिकता स्थाई नहीं होती। वह काल और स्थान सापेक्ष होती है। किन्तु कुछ मानवीय नैतिकताएं सर्वकालिक होती है। उन्हीं से कोई सभ्यता और संस्कृति सनातन बनी रह सकती है। पिछली सदी के नौवें दशक के बाद भारत में आर्थिक उदारीकरण का दौर शुरू हुआ। वैश्विक निवेश, निजीकरण, तकनीकी विस्तार और उपभोक्तावाद ने देश की आर्थिक स्थिति को सशक्त किया। आज भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने का दावा करता है जो इफ़रात की अर्थव्यवस्था है। बाजारों में उपभोक्ता वस्तुओं की भरमार है और बाज़ार में चीजों की कोई कमी नहीं है। बड़े–बड़े बाज़ार और मॉल सजे रहते हैं जहां ग्राहकों की भी कोई कमी नहीं नज़र आती है। पांच–सितारा निजी स्कूलों और अस्पतालों की भरमार है, जहां भारी–भरकम फ़ीसें हैं और भारी भीड़ें भी हैं। परंतु इस इफ़रात के युग में ईमानदारी जैसे मूल्य पीछे छूटते जाते दिख रहे हैं। जीवन के हर हिस्से में अब प्राथमिकता सफलता बन गई है, वह चाहे जैसे भी मिले – चाहे शॉर्टकट से, भ्रष्टाचार से, या किसी और के हिस्से को हड़पकर। परिणामस्वरूप, घोटालों की संख्या में बढ़ोतरी हुई, रिश्वत देना–लेना एक आम बात हो गई, और संस्थाओं पर जनता का भरोसा कमजोर हुआ है। सामाजिक स्तर पर भी बदलाव आया है। अब समाज में उस व्यक्ति को अधिक सम्मान मिलता है जो धनवान है, न कि उस व्यक्ति को जो ईमानदार है। यह मानसिकता युवा पीढ़ी में भी घर कर गई है। उन्हें सिखाया जाता है कि स्मार्ट बनो, सिस्टम को मात दो, तुरंत परिणाम लाओ – न कि ईमानदार रहो, धैर्य रखो, या सही रास्ता अपनाओ।

> **सरकारी और पुलिस कर्मियों व अधिकारियों तथा निर्वाचित जन-प्रतिनिधियों के कदाचार पकड़े जाने की रोजाना आ रही खबरें अब इतनी आम हो चली हैं कि वे किसी को असहज नहीं करती। पहले भ्रष्टाचार में पकड़े जाने वाले की निगाहें नीची होती थी और रिश्वत का लेन-देन टेबल के नीचे होता था। अब वह खुल्लम-खुल्ला होता है। कदाचार करने वाले अब समाज की नज़रों से नहीं गिरते।**

ईमानदारी के ह्रास के अनेक कारण गिनाए जा सकते हैं। जैसे आर्थिक विकास के साथ समाज में उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव बढ़ा है। अब सफलता का मापदंड नौकरी में बड़ा पैकेज, महंगी कार, आलीशान घर, ब्रांडेड कपड़े और महंगे फोन हो गया है। इससे सामाजिक प्रतिस्पर्धा बढ़ी है और लोगों ने शॉर्टकट अपनाने शुरू कर दिए हैं। शिक्षा प्रणाली पूरी तरह सरकारी रोजगार केंद्रित हो गई है, मूल्य आधारित शिक्षा को गौण कर दिया गया है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा कागजी नीतियों में सिमट कर औपचारिकता रह गई है या पूरी तरह से गायब हो चुकी है। जब समाज के शीर्ष नेतृत्व में ही नैतिक पतन दिखाई दे, तो आम जनता को नैतिक बनाना कठिन होता है। नेताओं, अधिकारियों और व्यवसायियों के बीच भ्रष्टाचारी गठबंधन के किस्से आम हैं। लोग सोचते हैं – जब बड़े कर सकते हैं, तो हम क्यों नहीं? तत्काल परिणाम पाने की मानसिकता वाली आज की पीढ़ी तुरंत पाने की संस्कृति में जी रही है। वह धैर्य, मेहनत और नैतिकता के लंबे रास्ते की बजाय, त्वरित लाभ के विकल्पों को चुनती है। ईमानदारी अब 'धीमी प्रक्रिया' के रूप में देखी जाती है। सोशल मीडिया ने एक नई मानसिकता को जन्म दिया है वह है दिखावे की जिंदगी। अब लोग वास्तविकता से अधिक अपना 'इंप्रेशन' बनाने में लगे हैं। इस होड़ में भी लोग जाने–अनजाने अनैतिक मार्गों को अपना लेते हैं।

यह सवाल उठता लाजिमी है कि क्या ईमानदारी अब जीवन में मूल्यहीन हो गई है? जवाब में यह कहना गलत होगा कि ईमानदारी पूरी तरह समाप्त हो गई है। अब भी समाज में ऐसे लोग हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी सत्यनिष्ठा से कार्य कर रहे हैं। परंतु समस्या यह है कि अब ऐसा अपवाद होता है, सामान्य स्थिति नहीं। जब ईमानदार अधिकारी को 'पागल', 'भुलक्कड़' या 'कायर' कहा जाने लगे, और भ्रष्ट व्यक्ति को 'तेज', 'स्मार्ट' और 'चालाक' कहा जाने लगे, तो यह साफ संकेत होता है कि समाज का नैतिक संतुलन बिगड़ चुका है। यहां एक भोला सा सवाल यह भी हो सकता है कि क्या ईमानदारी की वापसी संभव है? यह तभी संभव है जब परिवार में नैतिक शिक्षा का पुनर्स्थापन हो। बच्चों को ईमानदारी और नैतिकता की शिक्षा घर से ही मिले। माता–पिता खुद उदाहरण बनेंगे तभी बात बनेगी। बहुतों को यह दूर की कौड़ी नज़र आती है। स्कूलों में नैतिक शिक्षा को फिर से गंभीरता से लिये जाने की बातें सरकारी नीतियों में तो होती है किन्तु वे व्यावहारिक धरती पर नहीं उतरती। आज का सूचना मीडिया से भी कोई आशा नहीं रही है जो केवल सनसनी और ट्रोलिंग तक सीमित हो गया है। मनोरंजन मीडिया भी सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ कर अपने को बाहुबली समझ रहा है। नैतिकता के आदर्शों के तिरस्कार को वह अपनी अभिव्यक्ति की आज़ादी मान रहा है। राजनीतिक शुद्धता और जवाबदेही की सभी बातें तो करते हैं मगर वे उनके व्यवहार में नहीं दिखती। अधिकांश युवाओं के रोल मॉडल अब केवल फिल्म स्टार और अमीर बिजनेस टायकून होते हैं न कि ऐसे व्यक्तित्व जिन्होंने ईमानदारी और परिश्रम से अपनी जगह बनाई है। सामाजिक संरचना दोराहे पर खड़ी है। एक ओर आर्थिक समृद्धि का मार्ग है, जो सुविधाओं के लिए नैतिकता से वंचित करता है। दूसरी ओर वह मार्ग है जहां ईमानदारी, मूल्य और आदर्श हैं, परंतु वह कठिन और अल्पप्रिय है। समाज को यह निर्णय लेना है कि वह कैसी पीढ़ी तैयार करना चाहता है – वह जो केवल सफल हो या वह जो सफल होने के साथ–साथ सच्चा और ईमानदार भी हो। एक सशक्त, संतुलित और आत्मगौरव से भरा भारत बनाना है, तो ईमानदारी को फिर से केंद्र में लाना ही होगा। तभी समृद्धि का समान बंटवारा संभव होगा।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

टैक्स संग्रहण के दो प्रकार : प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर - राष्ट्र निर्माण में दोनों की भूमिका

सुनील दत्त गोयल

भारत में दो विभाग हैं जो करों का संग्रहण करते हैं। एक है सेंट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेज, जिसे प्रत्यक्ष कर निदेशालय भी कहते हैं, जिसका जिम्मा आपकी आय/आमदनी पर टैक्स लगाना है।

दूसरा है सेंट्रल बोर्ड ऑफ इंडायरेक्ट टैक्सेज एंड कस्टम्स (CBIC) अप्रत्यक्ष करों– GST (CGST/IGST), कस्टम/सीमा शुल्क–और शेष केंद्रीय उत्पाद शुल्क का प्रशासन करता है; CBIC का पूर्व नाम CBEC (एक्साइज व कस्टम्स) था। CBDT (प्रत्यक्ष कर) और CBIC (अप्रत्यक्ष कर) दो अलग–अलग बोर्ड हैं।

दोनों का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण के लिए कर संग्रह करना है। ये दोनों विभाग पिछले 10–11 वर्षों से जनता के हित में अच्छे निर्णय ले रहे हैं। भारत का जो कर संग्रह का मॉडल पिछले 10–11 वर्षों से चल रहा है, उसे विश्व के बाकी देशों को भी समझना चाहिए कि हमारी वर्तमान सरकार करों का संग्रह कितनी खूबसूरती से कर रही है।

टैरिफ, इंपोर्ट ड्यूटी, कस्टम/सीमा शुल्क और एंटी-डंपिंग ड्यूटी क्या हैं?

जब से इस वर्ष जनवरी में अमेरिका में ट्रंप सरकार आई, तब से टैरिफ शब्द की खूब चर्चा हो रही है और साथ में जुड़ गया है एक अनोखा शब्द वॉर तो कुल मिलकर एक नया शब्द हो गया है टैरिफ वॉर –यह क्या है, इसके मायने क्या हैं, किसको ज्यादा नुकसान होगा और किसको कम फायदा–यह समझना हर नागरिक के लिए जरूरी है। जब भी कोई देश किसी अन्य देश से आयात करता है, तो उस पर सीमा शुल्क/कस्टम ड्यूटी लगती है। कस्टम ड्यूटी लगाने का मूल उद्देश्य यह है कि आयात पर वाजिब शुल्क लगे, अप्रत्यक्ष कर और कर संग्रह में वृद्धि हो–राष्ट्र निर्माण के लिए यही मूल मंत्र है। अब सवाल आता है कि इसकी दरें कितनी हों।

जो देश आयात करता है, वह पहले जांचता है कि किसी वस्तु का घरेलू उत्पादन आवश्यकता से कम है या ज्यादा। यदि उत्पादन कम और जरूरत ज्यादा है, तो सीमा शुल्क वाजिब तरीके से लगाया जाएगा, ताकि देश के उत्पादकों और आयातकों–दोनों–को लेवल प्लेइंग फील्ड मिले, नागरिकों पर अनावश्यक कर बोझ न पड़े, और दामों में अत्यधिक अंतर से प्रतिस्पर्धा–विकृति न हो। अत्यधिक अंतर और गैर–जरूरी प्रतिस्पर्धा गलत प्रैक्टिस मानी जाती है।

एंटी–डंपिंग ड्यूटी का अर्थ है: यदि किसी देश में उसके उत्पादक अपनी क्षमता के अनुरूप उत्पादन कर रहे हैं और घरेलू मांग पूरी कर पा रहे हैं, फिर भी कोई दूसरा देश अपने निर्यातकों को सब्सिडी/छूट देकर दूसरे देश के उद्योगों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करे, तो आयातक देश अपने उत्पादकों की सुरक्षा हेतु आयातित माल पर एंटी–डंपिंग ड्यूटी लगाता है, ताकि कोई देश अपना अतिरिक्त उत्पादन दूसरे देश में डंप न कर दे। इसका उद्देश्य अपने देश के उत्पादन और उद्योगों को संरक्षण देना है। कई बार सैन्य कार्रवाई संभव न होने पर देश आर्थिक युद्ध छेड़ देते हैं, जिससे विरोधी देश की औद्योगिक क्षमता और व्यापार चक्र बाधित हो। इसी जोखिम से बचाव के लिए एंटी–डंपिंग ड्यूटी लगाई जाती है।

सरकार एक्सपोर्टर्स को ड्यूटी ड्रॉ–बैक का लाभ भी देती है। यदि निर्माण लागत अधिक होने से निर्यातक प्रतिस्पर्धा नहीं कर पा रहे हों, तो निर्यात मूल्य पर 2% से 25¬ तक का ड्यूटी ड्रॉ–बैक दिया जा सकता है। उदाहरण: किसी कंपनी ने 1 करोड़ डॉलर का निर्यात किया है और किसी विशेष देश के लिए 20% ड्यूटी ड्रॉ–बैक घोषित है, तो सरकार 20% यानी 20 लाख डॉलर का क्रेडिट निर्यातक को देती है। उद्देश्य है: निर्यात, रोजगार, औद्योगिक क्षमता, व्यापार और विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि। इसमें विस्तृत गणना और सिस्टम होते हैं; सामान्यत: मनमानी नहीं की जा सकती, और सरकारें इसे पारदर्शिता से लागू करने का प्रयास करती हैं–जब तक कि कोई विशेष देश बदले की भावना से कार्रवाई न करे।

भारत में भी 2000 से पहले तक निर्यात पर आयकर में विभिन्न रूपों में छूट मिलती थी–कभी पूरी छूट, कभी स्लैब/धाराओं में बदलाव–ताकि भारतीय उद्योगपति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बने रहें, रोजगार और औद्योगिकीकरण बढ़े, और भारत की वैश्विक पहचान मजबूत हो। इसी उद्देश्य से आयकर छूट/ड्यूटी ड्रॉबैक जैसे प्रावधान रहे।

अब ट्रंप सरकार और टैरिफ वॉर पर आते हैं। मेरे मत में या तो सलाहकार पारदर्शिता से काम नहीं कर पा रहे, या नेतृत्व स्वार्थवश बिना ठोस आधार के अलग–अलग देशों/सामानों पर आयात दरें मनमाने तरीके से तय कर रहा है। उदाहरण: यदि अमेरिका किसी विशेष आइटम पर 50% टैरिफ लगा दे–मान लें पहले 100,000 डॉलर के आयात पर 20% ड्यूटी लगती थी, तो लैंडेड कीमत 120,000 डॉलर होती थी; 50% टैरिफ होने पर यह 150,000 डॉलर हो जाएगी। प्रोसेसिंग, लॉजिस्टिक्स, स्टोरेज, विज्ञापन, मटेरियल मैनेजमेंट, हैंडलिंग, सप्लाई चेन आदि के खर्च भी अनुपातिक रूप से बढ़ेंगे। यानी लैंडिंग कॉस्ट पर ही 25–30ङ बढ़त, और आगे उपभोक्ता तक डिलीवरी तक अतिरिक्त लागत। पहले जहां 120,000 डॉलर की लैंडेड कॉस्ट पर वस्तु लगभग 200,000 डॉलर में बिकती थी, अब 150,000 डॉलर की लैंडेड कॉस्ट पर यह 225,000–250,000 डॉलर तक जा सकती है। क्योंकि 20% की जगह 50% ड्यूटी से ड्यूटी, ब्याज, डेप्रिसिएशन और अन्य प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष खर्च अनुपात में बढ़ते हैं।

अंततः नुकसान आयातकर्ता देश के उपभोक्ता/नागरिक का है जिसे पहले 200,000 डॉलर में मिलने वाली वस्तु अब 250,000 डॉलर तक मिलेगी। नतीजा: आयातक देश में महंगाई, संभावित बेरोजगारी, और सामाजिक–आर्थिक तनाव। शुरुआती चरण में सरकार को टैरिफ से राजस्व मिल सकता है, पर अंततः उपभोक्ता–पीड़ा और अर्थव्यवस्था पर असर से नुकसान की भरपाई कठिन हो जाती है।

सरकार का काम कर लगाना है, पर चाणक्य नीति कहती है: कर उतना ही जैसे आटे में नमक–ज्यादा होगा तो स्वाद खराब, कम होगा तो स्वादहीन। इसलिए, संयुक्त राष्ट्र के लगभग 198 देशों की सरकारों से–मैं एक लेखक और अपने 45 वर्षों के व्यापारिक अनुभव के आधार पर–निवेदन करता हूँ कि करारोपण से पहले देखें कि दोनों पक्षों में किसे कितना लाभ/हानि होगी। मैंने बजट से पहले कई बार वित्त मंत्रालय को सुझाव भेजे हैं: जब भी सिक्योरिटीज ट्रांजैक्शन टैक्स (एसटीटी), लॉन्ग–टर्म/शॉर्ट–टर्म कैपिटल गेन की अवधियां/दरें बदली जातीं और 2–3 हजार करोड़ अतिरिक्त वसूली का अनुमान लगाया जाता, बाजार तुरंत नकारात्मक प्रतिक्रिया देता। कई बार दिन के अंत तक 20–30 हजार करोड़, और कभी–कभी 2–3 लाख करोड़ रुपए तक का मार्केट कैप घट जाता है , लाखों निवेशकों का पैसा फंसता, और लोग बाजार से बाहर हो जाते।

अत: मेरी सभी सरकारों से प्रार्थना है: नागरिकों को खुश रखना आपका काम है। कर लगाने की मंशा बनाते समय गहरा होमवर्क करें–लगाने/न लगाने से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष नफा–नुकसान क्या होंगे, जनता में कैसा परसेप्शन बनेगा, विपक्ष क्या नैरेटिव खड़ा करेगा। आज सोशल मीडिया के दौर में परसेप्शन और नैरेटिव से सरकारें बदल जाती हैं। इसलिए टैक्स लगाने से पहले बाजार विशेषज्ञों से सलाह लें–निगेटिव/पॉजिटिव इम्पैक्ट कितने होंगे–और समझ आने पर ही घोषणा करें। फिर प्रेस ब्रीफिंग में साफ बताएं कि कर क्यों लगाया, क्या मंशा थी, दीर्घकाल में जनता, देश और राष्ट्र निर्माण के लिए विजन क्या है; और यह राजस्व किन क्षेत्रों में, कैसे, और किन अपेक्षित अच्छे परिणामों के लिए खर्च होगा। जनता को यह समझाना भी सरकार की जिम्मेदारी है।

आशा है, आप इसे साझा करेंगे और जनमानस को जागरूक करेंगे, क्योंकि आज के समय में फाइनेंस समझना हर व्यक्ति के उज्ज्वल भविष्य के लिए जरूरी है। चाहे आप विज्ञान, इंजीनियरिंग, डॉक्टरी या शिक्षण के पेशे में हों–अंततः आपका जीवन आपकी आय पर ही चलता है; इसलिए फाइनेंस की बुनियादी जानकारी आवश्यक है। मेरा यह लिखने का उद्देश्य भी यही था।

मेरा सभी सरकारों से पुन: निवेदन है कि इन सुझावों को सकारात्मक रूप में लें। जब भी टैक्स का करारोपण करें–भारत हो या अन्य देश–इन बातों पर ध्यान दें, अनावश्यक विवादों से बचें और विश्व में शांति का वातावरण बनाएं। एक–दूसरे को नीचा दिखाना/ डुबोना और उद्योग–धंधे बर्बाद करना सरकारों का काम नहीं है। सरकारों का काम है प्रजा को खुश, संपन्न, प्रभावशाली और खुशहाल बनाना; रोजगार के अवसर बढ़ाना; अराजकता से बचाना। ऐसा कोई कानून/ करारोपण न हो जिससे असमंजस या अव्यवस्था पैदा हो। राष्ट्र निर्माण के लिए कर निर्धारण करने वालों–सरकारी अधिकारियों और नीति–निर्माताओं–को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। कहीं ऐसा न हो की यह कहावत सही में चरितार्थ हो जाये कि अब पछताए क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

विश्व का कल्याण चाहने वाला देश है भारत : सरसंघचालक डॉ. भागवत

सीकर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि भारत दुनिया में धर्म देने वाला और विश्व का कल्याण चाहने वाला देश है। यहां के वेदों में सभी शास्त्र निहित हैं, ऋषियों की तपस्या से राष्ट्र में बल और ओज का संचार हुआ है। डॉ. भागवत मंगलवार को सीकर जिले में स्थित श्री जानकीनाथ बड़ा मंदिर, रैवासा धाम में ब्रम्हलीन पूज्य रेवासा पीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य वेदांती महाराज की प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित श्री सियपिय मिलन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने स्वामी राघवाचार्य की तीन फीट ऊंची संगमरमर की प्रतिमा का अनावरण और नव–निर्मित गुरुकुल भवन का लोकार्पण भी किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने स्वामी राघवाचार्य की तीन फीट ऊंची संगमरमर की प्रतिमा का अनावरण किया।

> **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत रेवासा पीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य वेदांती महाराज की प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित श्री सियपिय मिलन समारोह में पहुंचे**

सरसंघचालक ने कहा कि इतिहास ने भी जब आंखें नहीं खोली थी, तब से विश्व को सत्य, धर्म और आध्यात्म का मार्ग दिखाने और मानवता के कल्याण का कार्य भारतवर्ष और भारत का हिंदू समाज कर रहा है। सनातन काल से रीति ऐसे ही चल रही है। कई उतार–चढ़ाव आए। कभी हम स्वतंत्र रहे। कभी वैभव संपन्न रहे। कभी हम दरिद्र हो गए। कभी हम परतंत्र हो गए। अत्याचारी–पीड़ित हो गए। फिर भी यह काम लगातार चलता रहा। जब–जब दुनिया को विशेष रूप से इसकी आवश्यकता पड़ती है। तब भारत का उत्थान होता है। आज हम देख रहे हैं अप्रत्याशित रूप से अगर स्वतंत्रता के बाद का हमारा इतिहास देखें तो इतिहास के आधार पर कोई यह तर्क नहीं कर सकता कि भारतवर्ष उठेगा, लेकिन भारत वर्ष उठ रहा है। विश्व में अपना स्थान बना रहा है। डॉ. भागवत ने कहा कि भारत के स्वतंत्र होने के बाद लोगों ने भविष्यवाणी की थी कि यहां प्रजातंत्र चल ही नहीं सकता। प्रजातंत्र चला भी और जब इस पर संकट आया तो लोगों ने उसका प्रतिकार करके प्रजातंत्र को कायम रखा है। आज भारत आश्चर्यकारक रीति से प्रजातांत्रिक देश के नाते प्रजातंत्र के मामले में सारी दुनिया से आगे है।

उन्होंने कहा कि सत्य एक ही है, वही विश्वरूप है और वही विविध रूप में दिखाई देता है। मिथ्या कुछ समय तक ही चलती है, बाद में सब एक ही में विलीन हो जाता है। इसलिए हमारे यहां संतों की ऐसी कथाएं भी मिलती हैं। रामकृष्ण के जीवन का एक प्रसंग वर्णित है कि पंचवटी में वे गंगा को निहारते हुए बैठे थे। निहारते–निहारते उनका ध्यान लग गया और वे आसपास के समस्त दृश्य के साथ एकरूप हो गए। उसी समय सामने की हरियाली पर से एक गाय गुज़री। वे इतने गहरे एकत्व में लीन थे कि उनके अपने सीने पर गाय के पैरों के निशान पड़ गए। इतनी गहन तनमयता सम्पूर्ण सृष्टि के साथ प्राप्त करने की गुरुकुंजी हमारे पास है, यह चाबी हमारे पास है और यह कल्याणकारी चाबी सभी लोगों के लिए है। ऋषि–मुनियों ने सोचा कि सब एक हैं, सब अपने हैं। जो इतना महान श्रेय हमें मिला है, उसे संपूर्ण विश्व को देना चाहिए, लेकिन पूरे विश्व को यह देने के लिए केवल एक व्यक्ति पर्याप्त नहीं होगा, इसके लिए एक पूरा राष्ट्र अपना जीवनध्येय बनाकर इसे जिए। इसी उद्देश्य से ऋषियों ने अपनी तपस्या से इस राष्ट्र की निर्मिती की है।

डॉ. भागवत ने राघवाचार्य जी का स्मरण करते हुए कहा कि मेरा उनसे संबंध सरसंघचालक बनने के बाद ही हुआ। पहली भेंट में मेरे मन में दो बातें आई पहली, उनके हृदय में सभी के लिए स्नेह था, और दूसरी, वे सभी को आत्मीय भाव से देखते थे। उन्होंने बताया कि उनके जीवनकाल में मैं एक बार रैवासा धाम आ चुका हूं। उस समय उन्होंने मुझे गुरुकुल के छात्रों से भी मिलवाया था। उस वक्त भी वही स्नेह और समाज के प्रति वही तड़पन दिखाई दी। बहुत से ऐसे संत हैं जो संघ के कार्यक्रमों में नहीं आते, लेकिन वे स्वयंसेवक ही होते हैं। मैंने उनसे कहा था कि जब–जब आऊंगा, आपसे मिलूंगा। मैं दो–तीन बार आया, लेकिन उस समय महाराज प्रवास पर थे, इसलिए धाम नहीं आ सका। फिर से यहां आना, उनके जाने के बाद होगा। इसका मुझे बिल्कुल भी अनुमान नहीं था। ऐसा अनुमान किसी को होता भी नहीं है। सरसंघचालक ने कहा कि मैं देख रहा हूं कि समाज के हित के लिए वही तड़पन यहां के वातावरण में विद्यमान है। महाराज के जाने के बाद उनकी तपस्या आज दिखाई दे रही है। इस जगह भक्तमाल की रचना हुई। स्थान की परंपरा ऐसी ही चलती रहेगी। यह आज मुझे विश्वास हो गया है।

डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि यहां से प्रेरणा लेकर संपूर्ण देश में विचरण करने वाले हमारे संत हैं। बाकी दुनिया में भी अनेक पूजा–पद्धितयां हैं, लेकिन यदि उन पद्धितयों का पालन करने वालों से पूछा जाए कि जो आप बता रहे हैं उसे प्रत्यक्ष दिखाएं, तो उनके पास कोई उत्तर नहीं होगा। भारतवर्ष में आज भी आध्यात्म के रूप में जो कुछ कहा जाता है, वह हमारे यहां ऐसे व्यक्तियों के जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देता है, जिन्होंने उसे आचरण में उतारकर यश, कीर्ति, श्रेय और प्रेय सब कुछ प्राप्त किया है। ऐसे जीवन हमारे बीच ही हैं, जो हमारे साथ चलते–फिरते हैं, हमारे जैसे खाते–पीते हैं और सामान्य ही दिखाई देते हैं। तुकाराम महाराज महाराष्ट्र के एक संत हैं, उन्होंने कहा कि हम यहां के तो है नहीं, हम तो भगवान के और बैकुंठ के हैं। यहां पर क्यों आए हैं। वह मराठी में कहते हैं आमी बैकुंठवासी, आलो याचिकारंणा सी। इसी कारण से यहां पर आए हैं। ऋषियों ने जो कहा इसका सत्य आचरण हर समय तब तब के देशकाल परिस्थिति के अनुसार करके बताने के लिए हम यहां पर है।

उन्होंने कहा कि राघवाचार्य जी ने संस्कृत और संस्कृति के उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। यहां सभी का आगमन सदैव सहज, निर्बाध और बिना किसी भेदभाव के होता रहा है। संतों का जीवन इसलिए है और ऐसे संत का स्मरण आज हम एक साल बाद कर रहे हैं। उसी जगह दूसरे संत हमें आश्वस्त करते हुए कि एक संत जिनका पार्थिव चला गया लेकिन संत है, इसलिए मैं मानता हूं कि जब तक इस स्थान और उसकी महिमा को चलाने वाले संत लोग हैं तब तक हमको राघवाचार्य महाराज सदैव इस पीठ पर मिलते रहेंगे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 13 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र दिन 10:33 तक, धृति योग सायं 4:05 तक, बालव करण प्रात: 6:37 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कर्क, चन्द्रमा–मीन, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–मिथुन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज पंचक है। पंचमी तिथि का क्षय हुआ है। आज रक्षा पंचमी है। आज श्रवण तपस्या समाप्त (जैन) होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:16 तक, शुभ 10:54 से 12:32 तक, चर 3:47 से 5:25 तक, लाभ 5:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 2:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:01, सूर्यास्त 7:02

मेष

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

वृष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन

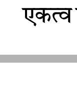

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

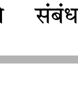

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह

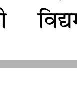

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कन्या

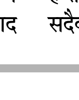

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

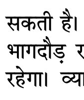

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

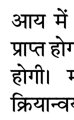

व्यावसायिक कार्यों कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

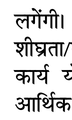

घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां यथावत बनी रहेगी।

मकर

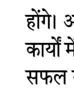

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

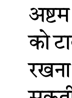

व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन

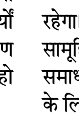

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।